अलविदा कमला भसीन

अरविन्द गुप्ता

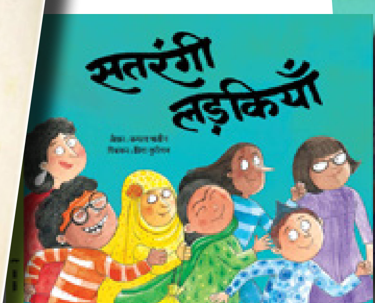


ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो ज़िन्दगी में इतनी अधिक व्यक्तिगत गर्दिशें झेलने के बाद भी हर पल जश्न मनाते हैं और फिर भी समाज को इतना कुछ देकर जाते हैं। कमला इसकी एक जीती-जागती मिसाल थीं। वो लाखों-करोड़ों लोगों के लिए प्रेरणा थीं।

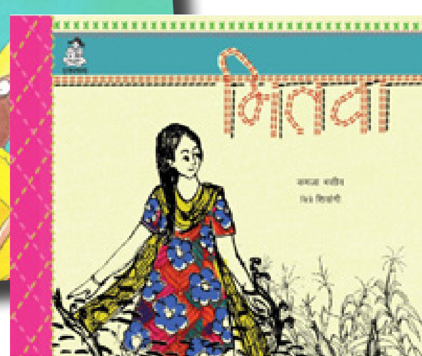
बचपन में ही वो यौन अत्याचार का शिकार बनीं। शायद इसीलिए उन्होंने फिर सारी ज़िन्दगी लड़कियों और औरतों की मुक्ति के लिए काम किया। हमारे देश में लड़कियों और महिलाओं को दूसरे दर्ज़े का इन्सान माना जाता है। बेटी पैदा होने पर कई लोग खुशी नहीं मनाते हैं। कहीं-कहीं तो बेटी को पैदा होने से पहले या फिर पैदा होने के तुरन्त बाद ही मार दिया जाता है। कहते हैं ना, बेटे को मक्खन और बेटी को छाछ। कमला को लगता था कि इस तरह के भेदभाव से सिर्फ लड़कियों और औरतों को ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को नुकसान होता है।

इसलिए उन्होंने बच्चों के लिए अलग तरह की किताबें लिखीं। अपनी किताबों में उन्होंने महिलाओं को उनका उचित स्थान और सम्मान दिया। *धम्मक-धम* में अम्मा अखबार पढ़ती हैं और अब्बा उनके लिए चाय बनाकर लाते हैं। अम्मा क्रिकेट के बल्ले से छक्का मारती हैं और पापा रोटी बेलते हैं — मोटी और टेढ़ी-मेढ़ी। घर का काम केवल औरतों का नहीं होता, बल्कि सबका होता है। अगर लड़के और मर्द खाना खाते हैं, तो उन्हें खाना बनाना भी सीखना चाहिए। उन्हें भी कपड़े धोने चाहिए।









लड़का क्या है? लड़की क्या है? किताब में उन्होंने औरत-मर्द के बीच असमानता के सवाल को बड़े खूबसूरत और सटीक तरीके से उठाया। कमला चाहती थीं कि हमारी बेटियों की ज़िन्दगी में भेदभाव और गैर-बराबरी खतम हो। सबसे अच्छी बात यह है कि आप कमला की सभी किताबें मुफ्त में ऑनलाइन पढ़ सकते हैं। उन्होंने अपनी सभी किताबों को मुफ्त में बाँटने और अनुवाद करने की लोगों को खुली छूट दी। शायद इसी वजह से जन-जन तक उनकी किताबें पहुँचीं।

युद्ध से उन्हें नफरत थी। इसलिए उन्होंने सारी ज़िन्दगी शान्ति और अमन के लिए काम किया। भारत-पाकिस्तान के लोगों के बीच दोस्ती कायम करने में उन्होंने ज़ोर-शोर से हिस्सा लिया। संयुक्त राष्ट्र संघ में खाद्य एवं कृषि संगठन के लिए काम करते हुए दक्षिण-पूर्व एशिया के तमाम देशों में उन्होंने महिला और स्वयंसेवी संगठनों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया।

कमला की बहिन बीना काक ने उनकी चिता को आग दी। और उनके तमाम दोस्तों ने कमला के लिखे गीतों को गाकर उन्हें अन्तिम विदाई दी।

भैया

ता ता थैया
सुन मेरे भैया
यूँ मत चीखो
काम काज सीखो
खाते हो जो खाना
सीखो उसे पकाना
अगर फाड़ते कपड़े
सीखो उनको सीना

भरना सीखो पानी
अगर तुम्हें है पीना
अपना काम करे जो खुद
बस उसका ही है जीना
ता ता थैया
सुन मेरे भैया



धम्मक धम

धम्मक धम भई धम्मक धम
छोटे छोटे बच्चे हम
लड़की,न लड़के से कम
धम्मक धम भई धम्मक धम



कमला भसीन
चित्र: मिकी पटेल

यूनिसेफ से प्रकाशित किताब *धम्मक धम बच्चों के गीत* से दो कविताएँ साभार



